माहेश्वर-तन्त्रम्

(हिन्दी-टीका सहितम्)

संशोधक एवं सम्पादक

डा० रुद्रदेव त्रिपाठी

एम.ए.पी-एच.डी., डी.लिट्.

(मन्त्रशक्ति, तन्त्रशक्ति, यन्त्रशक्ति, 'महामृत्युञ्जय-साधना एवं सिद्धि' आदि के लेखक)

रंजन पब्लिकेशन्स

१६, अन्सारी रोड, दरियागंज

नई दिल्ली - ११०००२

माहेश्वर-तन्त्रम्

हिन्दी-टीकासहितम्

संशोधक एवं सम्पादक

डॉ० रुद्रदेव त्रिपाठी

एम. ए. पी-एच. डी., डी. लिट्.

(मन्त्रशक्ति, तन्त्रशक्ति, यन्त्रशक्ति, महामृत्युञ्जय
साधना एवं सिद्धि आदि के लेखक)

पुस्तक महल
10-बी नेताजी सुभाष मार्ग
दरिया गंज नई दिल्ली-110002
फोन - 268292, 268293, 279900

रंजन पब्लिकेशन्स

१६, अन्सारी रोड, दरिया गंज,
नई दिल्ली-११०००२

प्रकाशक :
रंजन पब्लिकेशन्स
१६, अन्सारी रोड,
नई दिल्ली-११०००२

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

संशोधित संस्करण : १९८५

मूल्य : ५ रुपये

मुद्रक :
नवनीत प्रिण्टर्स
प्रताप पुरा, शाहादरा, दिल्ली-३२

माहेश्वर-तन्त्र

यह लघुकृति **'माहेश्वर-तन्त्र'** तन्त्रशास्त्र के प्रमुख-प्रमुख प्रयोगों को प्रस्तुत करने वाला भगवान् त्र्यम्बकेश्वर शिव की कृपा से प्राप्त ग्रन्थ है। इसमें लिखे अनुसार त्र्यम्बकेश्वर (नासिक महाराष्ट्र के निकटवर्ती प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंगस्थ पीठ) में निवास कर तप-साधना करने वाले महात्मा **'शिवगिरि'** को भगवान् शिव ने उनकी प्रार्थना पर प्रसन्न होकर इसे सुनाया था।

इसी ग्रन्थ में बतलाया गया है कि—'उक्त महात्मा संन्यासियों में शिरोमणि थे, अनेक तन्त्र-क्रियाओं की साधना में निपुण थे, किन्तु कुछ क्रियाओं में उनको सिद्धि नहीं मिल रही थी, इससे वे दुःखित होकर भगवान् शिव के मन्दिर में जाकर अनशन करके बैठ गये। भक्त की हठ-भक्ति से प्रसन्न होकर दयालु भगवान् शिव ने स्वप्न दिया और उत्तमोत्तम सिद्धिप्रद प्रयोग बतलाये। उन प्रयोगों की सिद्धि से उनका बड़ा प्रभाव फैल गया।

इधर उन्हीं दिनों जयपुर (राजस्थान) के निकटस्थ **'धोला'** गांव के निवासी पं० भवानीप्रसाद जी के पौत्र तथा पं० राजकुमार जी के पुत्र **पं० लक्ष्मीनारायण जी गौड़** यात्रा के प्रसंग से त्र्यम्बकेश्वर गये और वहां उन महात्मा जी की चारों ओर प्रशंसा सुनी। वे वहीं रुक गये और शिवगिरि जी महाराज की सेवा करने लगे। यथासमय उनकी कृपा हुई। उन्होंने मन्त्र-दीक्षा दी और अनेक तत्काल सिद्धि देने वाले उत्तम मन्त्रों और प्रयोगों का उपदेश किया।

पण्डित जी अच्छे विद्वान् और कवि थे, अतः गुरुदेव ने आज्ञा दी कि मेरे द्वारा बतलाये गये इन सिद्ध प्रयोगों को संस्कृत में श्लोकबद्ध करो और इन्हें भगवान् महेश्वर से प्राप्त होने के कारण **'माहेश्वर-तन्त्र'** के नाम से प्रसिद्ध करो।

गुरु-आज्ञा को शिरोधार्य कर पण्डित जी ने दस अंकों में यह तन्त्र संकलित किया। इसमें कुल १२२ पद्य हैं। पद्यों की भाषा सरल तथा स्वाभाविक है। विषय का प्रतिपादन अच्छे ढंग से किया गया है।

प्रस्तुत तन्त्र में जिन विषयों का संकलन है उनका संक्षिप्त परिचय क्रमशः इस प्रकार है—

प्रथम अंक

इस अंक में ११ पद्य हैं जिनमें ग्रन्थ-निर्माण से सम्बद्ध भूमिका प्रस्तुत की गई है। साथ ही यह भी कहा गया है कि इसमें १—मारण, २—मोहन, ३—स्तम्भन, ४—विद्वेषण, ५—उच्चाटन, ६—वशीकरण, ७—आकर्षण, ८—यक्षिणी-साधन और ९—'रसायन-प्रयोग' के रूप में नौ प्रयोगों का विवेचन दिया गया है।

द्वितीय अंक

इसमें मारण-प्रयोग का निर्देश करते हुए सर्वप्रथम साधक को सावधान किया गया है कि ऐसा उग्र कर्म प्राण-संकट होने पर ही करना चाहिये तथा संसार को ब्रह्म-रूप समझ कर ही प्रयोग करे जिससे दोष न लगे। इस प्रक्रिया का पूरा ज्ञान गुरु परम्परा से पहले प्राप्त कर लेना चाहिए अन्यथा इसमें स्वयं पर कष्ट आने का भय रहता है।

इस कार्य में 'पुत्तलिका-प्रयोग' और 'महाकाल-भैरव के मन्त्र' का उल्लेख करके ११ पद्यों में अंक पूर्ण किया है।

तृतीय अंक

तत्काल-सिद्धि की दृष्टि से मोहन-प्रयोगों का विवरण इस अंक में ९ श्लोकों द्वारा दिया गया है। सभी प्रयोग तिलकधारण पर आधारित हैं। हमने भी अपने ग्रन्थ 'तन्त्र-शक्ति' में 'तिलक-तन्त्र' प्रकरण में इस पर विचार एवं प्रयोग दिये हैं। वहां भी देखकर विशेष लाभ प्राप्त करें।

चतुर्थ अंक

इस अंक का विषय स्तम्भन से सम्बद्ध है। इस कार्य के लिए यहां १—अग्नि-स्तम्भन, २—आसन-स्तम्भन, ३—बुद्धि स्तम्भन, ४—शस्त्र-स्तम्भन, ५—पशु-स्तम्भन, ६—मनुष्य-स्तम्भन, ७—मेघ-स्तम्भन, ८—निद्रा-हरण, ९—नौका-स्तम्भन, १०—गर्भ-स्तम्भन के प्रयोग बतलाये हैं। साथ ही कुछ मन्त्र भी दिये हैं। इसमें १८ पद्य हैं।

पंचम अंक

विद्वेषण-प्रयोग के लिए इस अंक में एक मन्त्र और कुछ उपाय दिखाये हैं। आपस में लड़ाई कराने के लिए यह प्रयोग होता है।

छठा अंक

यह अंक उच्चाटन के लिए कुछ प्रयोगों का निर्देश ६ पद्यों में करता है। रौद्ररूप महारुद्र का मन्त्र भी दिया है।

सातवां अंक

वशीकरण के लिए जिन तन्त्र-विधानों का प्रयोग होता है, उनमें कुछ का संकेत यहां २० पद्यों में निर्दिष्ट है। इन प्रयोगों में पान में डालने का वशीकरण गुटिका और तिलक-प्रक्रिया के साथ मोहिनी-मन्त्र का भी उल्लेख है। इन्हीं के साथ—

स्त्री, पुरुष और राजा के वशीकरण के लिए १—पान में मिलाने का चूर्ण, २—पुत्तलिका-विधान, ३—कज्जल-विधान तथा ४—बीजभक्षण-विधान प्रमुख हैं। कामाक्षी देवी और सूर्य के मन्त्र का उल्लेख भी किया है तथा विशेष रूप से ब्राह्मण-पूजा और स्वर्ण-दान से इन प्रयोगों की सिद्धि मिलने का निर्देश किया है।

आठवां अंक

यह अंक आकर्षण-विधान का सूचक है, इसमें वीरवेताल का मन्त्र एवं पंचदशी (पन्द्रह अंक) यन्त्र के माध्यम से विदेश में गये व्यक्ति को बुलाने का प्रयोग है तथा स्त्री-आकर्षण का भी एक प्रयोग दिया है। इसमें केवल ६ पद्य हैं।

नौवां अंक

मन की इच्छित सभी बातों को पूर्ण करने के लिए **'यक्षिणी-साधन'** का वर्णन इस अंक में बतलाया है। यहां शिव पूजन, त्र्यम्बक (महामृत्युंजय) मन्त्र का जप तथा कुबेर की पूजा का विशेष निर्देश दिया है। महायक्षिणी-मन्त्र एवं उसके साक्षात्कार से वर-लाभ का विवेचन करते हुए साधक के लिए कर्त्तव्यों का संकेत भी किया है। २० पद्यों में यह अंक पूरा हुआ है।

दसवां अंक

मनुष्य कुबेर के समान धन-प्राप्ति कैसे कर सकता है? इसके लिए कुछ रसायन-प्रयोगों का सूचन इस अंक का विषय है। इसमें सुवर्ण बनाने की विधि दिखाई है और त्र्यम्बक-मन्त्र के जप का आदेश किया है। साथ ही खरल में पीसते समय जपने योग्य एक स्वर्णसिद्धिकर शिव-मन्त्र भी दिया है।

अन्त के पांच पद्यों में पण्डित जी ने अपना परिचय देकर ग्रन्थ को पूर्ण किया है।

आज के सन्दर्भ में ग्रन्थ की उपयोगिता

हमारा तन्त्र साहित्य अति विशाल है। हजारों प्रयोग इसमें बतलाये गये हैं और उनमें प्रदर्शित मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र सम्बन्धी विषयों के बारे में कीलित और और शप्त होने का संकेत देकर उनके उत्कीलन तथा शापोद्धार भी दिये हुए प्राप्त होते हैं।

इन सबके पीछे एक बात और है—गुरुगम्य प्रक्रिया की। जैसे किसी मशीन के सामने रहने पर तथा उसके चलाने की तीव्र इच्छा के रहने पर भी बिना उसका ज्ञान प्राप्त किये कोई चला नहीं पाता और यदि हठवश चलाता भी है तो उसका परिणाम अच्छा नहीं होता। उसी प्रकार इस विद्या में गुरु द्वारा मार्गदर्शन और सूक्ष्म निर्देशों की पूर्ण आवश्यकता रहती है। अतः साधना की इच्छा वाले व्यक्ति को इस ओर ध्यान देना चाहिये।

इसके अतिरिक्त अनेक बातें साधना के लिए अपेक्षित हैं जिनका उल्लेख हमने क्रमशः १—मन्त्र शक्ति, २—तन्त्र शक्ति, ३—यन्त्र शक्ति भाग-१,

४—यन्त्र शक्ति भाग-२, ५—महामृत्युंजय साधना और सिद्धि आदि ग्रन्थों में दिये गये परिचय-विभागों में किया है। पाठक वहीं देखकर ज्ञान प्राप्त करें।

तन्त्र-ग्रन्थों की अपनी एक स्वतन्त्र रचना-प्रक्रिया होती है। 'माहेश्वर-तन्त्र' नाम से ही और भी तन्त्र ग्रन्थ प्राप्त होते हैं, जिनमें कहीं योग और कहीं स्वर-शास्त्र का वर्णन किया गया है। इस दृष्टि से यह **'माहेश्वर-तन्त्र'** भी परम उपयोगी है।

माहेश्वर-तन्त्र में दिये गये कर्म आज के युग में कुछ आवश्यक नहीं लगते, ऐसा भी कुछ लोग कह सकते हैं, उनके लिए हमारा कथन है कि युग के अनुरूप इन प्रयोगों को देखें और उसी दृष्टि से प्रयोग करें। कल्याण होगा। हमारी नई रचना **'रुद्रयामल तन्त्र'** में अन्य तन्त्र सम्बन्धी विशेष जानकारी दी गई है। पाठक उसका अध्ययन करके लाभ प्राप्त करें।

—डॉ० रुद्रदेव त्रिपाठी

भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठतम धरोहर

महामृत्युंजय
(साधना एवं सिद्धि)

लेखक—डा० रुद्रदेव त्रिपाठी
(एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट्०)

इस ग्रंथ से आप प्राप्त करेंगे

- मानसिक शान्ति
- रोग एवं क्लेश से मुक्ति
- विरोधियों को निराशा
- आपसी मनमुटाव का निवारण
- सुरक्षा का अद्भुत कवच
- बाधाएं दूर हों
- अचानक विपत्ति से बचाव
- साहस को बढ़ावा
- इच्छा सिद्धि का अचूक उपाय
- दिशा-निर्देश

सरलता इतनी कि जिससे आप स्वयं कर सकें
विद्वान इसकी उच्चता एवं महत्त्व से परिचित हैं
(मूल्य : चालीस रुपये; डाक व्यय अलग)

दैवज्ञ वल्लभा

मूल रचनाकार—**आचार्य वराहमिहिर** हिन्दी व्याख्याकार **डा० शुकदेव चतुर्वेदी**

प्रस्तुत पुस्तक—आचार्य वराहमिहिर विरचित "दैवज्ञ वल्लभा", प्रश्न शास्त्र का दुर्लभ एवं मानक ग्रन्थ है। इसमें प्रश्न-शास्त्र के समस्त सिद्धान्तों, तथ्यों तथा जीवनोपयोगी प्रश्नों का विवेचन शास्त्रीय एवं सरल रीति से किया गया है।

प्रश्न शास्त्र के इस दुर्लभ ग्रंथ में कार्य-सिद्धि, लाभ-हानि, अचानक लाभ, विदेश यात्रा, विदेशी व्यापार, व्यवसाय में सफलता, विवाद में हार-जीत, चोरी गई वस्तु की प्राप्ति, विवाह, प्रेम, दाम्पत्य सुख, गर्भपात, पुत्र-कन्या जन्मयोग, श्रमिक विवाद और देश की राजनैतिक एवं आर्थिक स्थिति का विचार बड़े ही सुलझे हुए ढंग से किया गया है।

ज्योतिष शास्त्र के अधिकारी विद्वान ने मूल संस्कृत श्लोकों में वर्णित समस्त सिद्धान्त एवं योगों का सरल एवं विशद विवेचन हिन्दी भाषा में किया है। इस प्रकार यह पुस्तक ज्योतिष शास्त्र के अनुरागियों, तथा सिद्धहस्त विद्वानों के लिए समान रूप से पठनीय एवं संग्रहणीय है। **मूल्य 25 रुपये, विशेष 40 रुपये**

श्रीः

अथ माहेश्वर-तन्त्रम्

हिन्दीटीकासहितम्

प्रथमः अंकः

श्रीगणेशाय नमः ।। श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः ।।

गंगाधरं श्रीगिरिजासमेतं ज्वालाप्रसादं च गुरुं प्रणम्य ।
लक्ष्म्यादिशब्देन विराजमानो नारायणोऽहं कथयामितन्त्रम् ।।१।।

श्री गिरिराजनन्दिनीसमेत महादेव जी को तथा गुरु ज्वालाप्रसाद जी को प्रणाम करके मैं लक्ष्मीनारायण तन्त्रशास्त्रों का सारभूत तन्त्र कहता हूं ।।१।।

श्रीमत्र्यम्बकपर्वते शिवगिरिः संन्यासिनामग्रणी-
र्नानातन्त्रविधानसाधनयुतो ह्यासीत्सतां वल्लभः ।
तन्त्रानेकक्रियासु सिद्धिर्मविंदन् गत्वाऽनुतापं मुहु-
श्चक्रे शंकरसंनिधौ सुविनयं त्यक्त्वाऽशनं सर्वथा ।।२।।

सुन्दर त्र्यम्बकपर्वत पर संन्यासियों का शिरोमणि, अनेक तन्त्रों में कही हुई क्रियाओं के साधनों से युक्त और सज्जनों का प्रिय शिवगिरि था । तन्त्रों की बहुत-सी क्रियाओं में सिद्धि प्राप्त न होने से उसे बड़ा परिताप हुआ, पर फिर उसने सब आहार आदि को छोड़ महादेव जी के निकट जाकर प्रार्थना की ।।२।।

तस्मै श्रीगिरिजापतिः कथितवान् स्वप्ने प्रयोगाञ्छुभान्,
येभ्यः सिद्धिमनुत्तमामनुभवञ्जातश्च सिद्धाग्रणीः ।
सोऽस्माकं बहुसेवया कथितवान् प्रत्यक्षसिद्धिप्रदां-
स्तान्मन्त्रान् प्रकटीकरोमि सुधियामानन्ददानद्भुतान् ।।३।।

श्री महादेव जी ने स्वप्न में उससे अच्छे-अच्छे प्रयोग कहे, जिनसे उसे सिद्धि प्राप्त करने में अच्छी सफलता हुई और वह सब सिद्धों का अग्रगण्य हो

गया। उसकी मैंने बहुत सेवा की तब उसने मुझसे प्रत्यक्ष सिद्धि देने वाले मन्त्र कहे, पंडितों को आनन्द देने वाले उन्हीं अद्भुत मन्त्रों को मैं प्रकाशित करता हूं ॥३॥

यथा शिवगिरिंदे वः स्वप्ने कथितवान् हरः।
तेनैव विधिना वक्ष्ये तन्त्रं मन्त्रसमन्वितम् ॥४॥

जैसे भगवान् महादेव ने शिवगिरि से स्वप्न में कहा था, उसी विधि से मैं मन्त्र समेत तन्त्र को कहता हूं ॥४॥

स्वप्ने तु गिरीशं दृष्ट्वा त्र्यम्बकं वृषवाहनम्।
पार्वत्या सहितं देवं योगी पप्रच्छ सादरम् ॥५॥

पार्वती सहित बैल पर विराजमान, त्रिलोचन, भगवान् त्र्यम्बक को स्वप्न में देखकर शिवगिरि ने आदरसहित पूछा ॥५॥

मुनिरुवाच

नमामि सच्चिदानन्दं जगद्योनिमुमापतिम्।
छिन्धि मे संशयं देव! नान्यथा जीवितं मम ॥ ६ ॥

मुनि बोला—सत् चित्, आनन्दरूप, जगत् के कारण और पार्वती के पति शिवजी को मैं प्रणाम करता हूं। हे देव! मेरा संदेह दूर कीजिये, नहीं तो मेरा जीना कठिन है ॥ ६ ॥

भवता कथिता मन्त्रास्ते कथं सिद्धिवर्जिताः।
मया परीक्षिताः सर्वे योगयुक्तेन चेतसा ॥ ७ ॥

आपके कहे हुए सब मन्त्रों की मैंने योगयुक्त चित्त से प्रयोग करके परीक्षा की। उनकी सिद्धि क्यों नहीं होती? ॥ ७ ॥

ईश्वर उवाच

ये मन्त्रा लोकविख्यातास्ते सर्वे कीलिता मया।
तस्मात्सिद्धिविहीनास्ते याता निःसारतां भुवि ॥ ८ ॥

महादेव बोले—जो मन्त्र संसार में प्रकट हैं उन सबको मैंने कील दिया है, इसलिए उनसे सिद्धि नहीं हो सकती। पृथ्वी पर वे निःसार हो गये हैं ॥ ८ ॥

तस्मादुत्तिष्ठ भद्रं ते कथयामि सुसिद्धिदान्।
मन्त्रानकीलितान् वत्स ! यैस्त्वं सिद्धो भविष्यसि ॥ ९ ॥

इसलिए हे वत्स ! उठ, तेरा मंगल हो, मैं सिद्धि देने वाले बिना कीले हुए मंत्र तुझसे कहता हूं जिनसे तू सिद्ध हो जाएगा ॥ ९ ॥

मारणं मोहनं स्तम्भनं विद्वेषोच्चाटनं वशम्।
आकर्षणं यक्षिणीं च रसायनकरं तथा ॥ १० ॥
प्रयोगैर्नवभिर्युक्तं तन्त्रं माहेश्वराभिधम्।
इदं ते कथयिष्यामि लोकानां हितकाम्यया ॥ ११ ॥

मारण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन, वशीकरण, आकर्षण, यक्षिणियों का साधन और रसायन ॥ १० ॥

इन नौ प्रयोगों से युक्त यह माहेश्वर नामक तन्त्र लोकहित की इच्छा से तुझसे कहता हूं ॥ ११ ॥

प्रथम अंक समाप्त

द्वितीयः अंकः

ईश्वर उवाच

अथातः कथयिष्यामि प्रयोगं मारणाभिधम्।
सद्यः सिद्धिकरं नृणां शृणुष्वावहितो मुने ॥ १ ॥

महादेव बोले—अब मारण प्रयोग कहता हूं जिससे कि मनुष्यों को तत्काल सिद्धि होगी। हे मुने ! सावधान होकर सुनो ॥ १ ॥

मारणं न वृथा कार्यं यस्य कस्य कदाचन।
प्राणान्तसंकटे जाते कर्तव्यं भूतिमिच्छता ॥ २ ॥

वृथा चाहे जिसका मारण कभी न करना चाहिए। जिसे ऐश्वर्य की इच्छा हो ऐसे आदमी को जब प्राण संकट में हों, तभी इसका प्रयोग करना चाहिए ॥ २ ॥

ब्रह्मात्मानं तु विततं दृष्ट्वा विज्ञानचक्षुषा।
सर्वत्र मारणं कार्यमन्यथा दोषभाग्भवेत् ॥ ३ ॥

'सब संसार ब्रह्मरूप है' यह ज्ञानरूपी नेत्रों से देखकर मारण प्रयोग करना चाहिए, नहीं तो दोष होता है ॥ ३ ॥

मूर्खेण तु कृते तन्त्रे स्वस्मिन्नेव समापयेत्।
तस्माद्रक्ष्यं सदात्मानं मारणं न क्वचिच्चरेत् ॥ ४ ॥

मूर्ख अज्ञान से प्रयोग करे तो वह उस पर ही पड़ता है, इसलिए अपनी रक्षा करे और मारण प्रयोग जहां तक हो सके कभी न करे ॥ ४ ॥

कर्त्तव्यं मारणं चेत्स्यात्तदा कृत्यं समाचरेत्।
शत्रुपादतलात्पांसुं गृहणीयाद्भौमवासरे ॥ ५ ॥

यदि मारण करना आवश्यक हो तो इस प्रकार से करे कि मंगल के दिन शत्रु ने जिस स्थान में अपना पैर रखा हो वहां की धूल लावे ॥ ५ ॥

गोमूत्रेण च संसिच्य प्रतिमां कारयेद् द्विजः।
निर्जने च नदीतीरे स्थापयेत् स्थण्डिलोपरि ॥ ६ ॥

उसमें गोमूत्र मिलाकर शत्रु की मूर्ति बनावे और नदी तीर पर एकान्त में वेदी पर उसे स्थापित करे ॥ ६ ॥

लोहशूलं च निखनेत्तद्वक्षसि सुदारुणम्।
तद्वामे भैरवं कृष्णं बलिभि प्रत्यहं यजेत् ॥ ७ ॥

उसकी छाती में अत्यन्त कठिन लोहे का त्रिशूल गाड़ दे और उसकी बाईं ओर बलिदान देकर कालभैरव का प्रतिदिन पूजन करे ॥ ७ ॥

एकादशवटूंस्तत्र परमान्नेन भोजयेत्।
अखण्डदीपं तस्याग्रे कटुतैलेन ज्वालयेत् ॥ ८ ॥

वहां ग्यारह बालकों को उत्तम अन्न से भोजन कराये और उस मूर्ति के आगे सरसों के तेल का ऐसा दीपक जलाये जो दिन-रात जलता रहे ।। ८ ।।

व्याघ्रचर्मासनं कृत्वा निवसेत्तस्य दक्षिणे ।
दक्षिणाभिमुखो रात्रौ जपेन्मन्त्रमतन्द्रितः ।। ९ ।।

व्याघ्रचर्म का आसन बिछाकर उसके दक्षिण की ओर बैठे और रात्रि को दक्षिण दिशा की ओर मुख करके सावधान होकर इस मन्त्र को जपे ।। ९ ।।

ॐ नमो भगवते महाकालभैरवाय कालाग्नितेजसे अमुकं मे शत्रं मारय मारय पोथय हुं फट् स्वाहा ।।

इस मन्त्र का जप करना । (यहां अमुकं के स्थान पर शत्रु का नाम बोले ।)

अयुतं प्रजपेदेनं मन्त्रं निशि समाहितः ।
एकोनत्रिंशद्दिवसैर्मारणं जायते ध्रुवम् ।। १० ।।

रात को सावधान होकर यह मन्त्र दस हजार बार जपे तो निश्चयपूर्वक उनतीस दिन में मारण होगा ।। १० ।।

इत्येवं मारणं तन्त्रं सद्यः सिद्धिकरं नृणाम् ।
कथितं शिवगिरे तुभ्यं मोहनं शृण्वथो परम् ।। ११ ।।

इस प्रकार यह मारणतन्त्र मनुष्यों को तत्काल सिद्धि देनेवाला है। हे शिवगिरे ! यह मैंने तुझसे कहा । अब मोहन प्रयोग सुनो ।। ११ ।।

द्वितीय अंक समाप्त

तृतीयः अंकः

ईश्वर उवाच

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि प्रयोगं मोहनाभिधम् ।
सद्यः सिद्धिकरं नृणां शृणु योगीन्द्र ! यत्नतः ।। १ ।।

अब मोहन प्रयोग को कहता हूं; जिससे मनुष्यों को तत्काल सिद्धि होती है। हे योगिराज ! सावधान होकर सुनो ।। १ ।।

पेषयेत्तुलसीबीजं सहदेव्या रसेन च ।
रवौ यस्तिलकं कुर्यान्मोहयेत्सकलं जगत ॥ २ ॥

सहदेवी के रस में तुलसी के बीज पीसे । रविवार के दिन जो इनका तिलक लगावे वह सब संसार को मोहित कर ले ॥ २ ॥

हरितालं चाश्वगन्धां पेषयेत् कदलीरसैः ।
गोरोचनेन संयुक्तं तिलकं लोकमोहनम् ॥ ३ ॥

हरताल, असगन्ध और गोरोचन केले के रस में पीसकर तिलक करे तो संसार को मोहित कर ले ॥ ३ ॥

भृंङ्गीचन्दनकुष्ठेन वचाधूपेन धूपयेत् ।
वस्त्राणि च मुखं चैव सर्वजन्तून् विमोहयेत् ॥ ४ ॥

काकडासिंगी, चन्दन, कूट और वच इनकी धूप मुख और कपड़ों में देने से सब प्राणियों को मोहित कर ले ॥ ४ ॥

मनःशिलां च कर्पूरं पेषयेत्कदलीरसैः ।
तिलकं मोहनं नृणां नान्यथा मम भाषितम् ॥ ५ ॥

मैनसिल और कपूर केले के रस में पीसकर तिलक करे तो मनुष्यों को मोहित कर ले । मेरा यह कहना सत्य है ॥ ५ ॥

सिन्दूरं कुंकुमं चैव गोरोचनसमन्वितम् ।
धात्रीरसेन सम्पिष्टं तिलकं लोकमोहनम् ॥ ६ ॥

सिन्दूर, केसर और गोरोचन आंवले के रस में पीसकर तिलक करे तो संसार को मोहित कर ले ॥ ६ ॥

औदुम्बरस्य पुष्पेण वर्तिं कृत्वा प्रदीपयेत् ।
नवनीतेन संयुक्तं कज्जलं लोकमोहनम् ॥ ७ ॥

गूलर के फूल की बत्ती बनाकर और उसमें मक्खन लगाकर उसे जलावे । उसका काजल बनाकर लगाने से संसार को मोहित कर ले ॥ ७ ॥

श्वेतार्कमूलमादाय श्वेतचन्दनसंयुतम् ।
अनेन तिलकं भाले जगतो मोहनं भवेत् ॥ ८ ॥

सफेद आक की जड़ और सफेद चन्दन इनका तिलक मस्तक में करने से संसार को मोहित कर ले ॥ ८ ॥

विजयावचमादाय श्वेतसर्षपसंयुतम् ।
उद्वर्तनेन देहस्य जगतो मोहनं भवेत् ॥ ९ ॥

विजया, वच तथा श्वेत सरसों इनका देह में उबटन करने से संसार को मोहित कर सकता है ॥ ९ ॥

ॐ रक्तचामुण्डे सर्वजनान् मोहय मोहय मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।
(सपादलक्षजपात्सिद्धिर्भवति ।)

इस मन्त्र को सवा लाख जपने से सिद्धि होगी ।

तृतीय अंक समाप्त

चतुर्थः अंकः

ईश्वर उवाच

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि प्रयोगं स्तम्भनाभिधम् ।
यस्य साधनमात्रेण सिद्धिः करतले भवेत् ॥ १ ॥

ईश्वर बोले—अब स्तम्भन प्रयोग कहता हूं, जिसके साधन से ही सिद्धि मुट्ठी में आ जाती है ॥ १ ॥

कुमारीरसयुक्तेन तैलेनाभ्यङ्गमाचरेत् ।
अग्निना न दहेदङ्गमग्निस्तम्भः प्रजायते ॥ २ ॥

घीगुवार का गूदा और तेल मिलाकर शरीर में लगाने से शरीर आंच से जलता नहीं है । अग्नि का स्तम्भन हो जाता है ॥ २ ॥

कदलीरसमादाय कुमारीरसं लेपयेत् ।
अर्कदुग्धं तथा युक्तमग्निस्तम्भः प्रजायते ॥ ३ ॥

केले का रस, घीगुवार का गूदा और आक का दूध इनके लगाने से अग्नि-स्तम्भन होता है ॥ ३ ॥

कुमारीरसलेपेन किञ्चिद्वस्तु न दह्यते ।
अग्निस्तम्भनयोगोऽयं नान्यथा मम भाषितम् ॥ ४ ॥

घीगुवारके गूदेका लेप करने से कोई वस्तु जलती नहीं है । मेरा कहना मिथ्या नहीं है । यह अग्नि-स्तम्भन योग है ॥ ४ ॥

ॐ नमो अग्निरूपाय मम शरीरे स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र को एक लाख जपने से सिद्धि होती है ।

नृकपाले मृदं क्षिप्त्वा श्वेतगुञ्जां च निर्वपेत् ।
गोदुग्धेन तु संसिच्य कुर्याद् गुञ्जालतां शुभाम् ॥ ५ ॥

आदमी की खोपड़ी में मिट्टी भरकर उसमें सफेद गुंजा के बीज बोए । फिर उसे गाय के दूध से सींचने से गुंजा की सुन्दर बेल उगेगी ॥ ५ ॥

यस्यांगे तल्लता क्षिप्ता स्थानस्तम्भः प्रजायते ।
यस्य नाम्ना च लवणं श्मशानाग्नौ जुहेत्तथा ॥ ६ ॥

यह लता जिसके शरीर पर डाल दी जाएगी उसका आसनस्तंभन हो जाएगा । जिसका नाम लेकर मुर्दे पर चिता की अग्नि में नोन से होम करे उसका भी आसन स्तम्भन हो जाएगा ॥ ६ ॥

ॐ नमो दिगम्बराय अमुकस्यासनं स्तम्भय स्तम्भय फट् स्वाहा ।
(अस्य मन्त्रस्य लक्षजपात्सिद्धिर्भवति ।)

इस मंत्र को एक लाख जपने से सिद्धि होगी ।

भृङ्गराजमपामार्गं सिद्धार्थं सहदेविका ।
कोलं वचां च श्वेतार्कः सत्त्वमेषां समाहरेत् ॥ ७ ॥

भांगरा, अपामार्ग, सरसों, सहदेवी, कंकोल, वच और सफेद आक की जड़ इनका सत निकाले ॥ ७ ॥

लोहपात्रे विनिक्षिप्य त्रिदिनं मर्दयेत्सुधीः।
ललाटे तिलकं कुर्याद् द्रष्टुर्बुद्धिः प्रणश्यति॥ ८॥

लोहे के बर्तन में रखकर तीन दिन तक घोटे फिर मस्तक में इसका तिलक कर ले। जो उसे देखे उसकी बुद्धि नष्ट हो जाए॥ ८॥

उलूकस्य कपेर्वापि ताम्बूले यस्य दापयेत्।
विष्ठां प्रयत्नतस्तस्य बुद्धिस्तम्भः प्रजायते॥ ९॥

उल्लू या वानर की विष्ठा होशियारी से पान में रखकर जिसे खिलावे उसकी बुद्धि का स्तम्भन हो जाए॥ ९॥

ॐ नमो भगवते नृसिंहाय अमुकस्य बुद्धिस्तम्भनं कुरु कुरु फट् स्वाहा। (सपादलक्षजपात्सिद्धिर्भवति।)

इस मन्त्र को सवा लाख जपने से सिद्धि होगी।

पुष्यार्केऽह्नि सपादाय अपामार्गस्य मूलकम्।
घृष्ट्वा लिम्पेच्छरीरे स्वे शस्त्रस्तम्भः प्रजायते॥ १०॥

रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में अपामार्ग की जड़ लाकर और उसे घिसकर अपने शरीर में लेप करे तो शस्त्रों का कुछ असर न होवे॥ १०॥

चिताङ्गारेण विलिखेन्मन्त्रं पात्रे च मृण्मये।
रिपुनामयुतं तच्च जलकुण्डे विनिक्षिपेत्॥११॥

चिता के कोयले से मिट्टी के बर्तन में शत्रु के नाम के साथ मंत्र लिखकर उसे जल से भरी हुई कुंडी में डाल दे॥ ११॥

शिलया स्तम्भयेद् द्वारं सेनास्तम्भः प्रजायते।
उष्ट्रास्थि निखनेद्दिक्षु पशुस्तम्भः प्रजायते॥१२॥

और ऊपर से शिला से ढक दे तो सेना का स्तम्भन हो जाता है, जिसके सब ओर ऊंट की हड्डी गाड़ दे उस पशु का स्तम्भन हो जाता है॥ १२॥

ऋतुमत्या योनिवस्त्रे लिखेद् गोरोचनैर्नरम्।
तन्नाम्ना प्रक्षिपेत्कुम्भे नरस्तम्भः प्रजायते॥१३॥

रजस्वला स्त्री की योनि के वस्त्र पर गोरोचन से मनुष्य की तसवीर बनाये और फिर उसका नाम लेकर उसे घड़े में गिरा दे तो मनुष्य-स्तम्भन हो जाता है ॥ १३ ॥

इष्टकां सम्पुटे कृत्वा तस्मिन्मेघं समालिखेत् ।
श्मशानभस्मना स्थाप्य भूमौ स्तम्भः प्रजायते ॥१४॥

ईंटों का संपुट बनाकर उसमें चिता की राख से बादलों की तसवीर बनावे और फिर उसे धरती में गाड़ दे तो मेघों का स्तम्भन होता है ॥ १४ ॥

मधुना बृहतीमूलै रञ्जयेल्लोचनद्वयम् ।
निद्रास्तम्भो भवेत्तस्य नान्यथा मम भाषितम् ॥१५॥

शहद में पीसकर कंटकारी की जड़ को नेत्रों में आंजने से निद्रा नहीं आती है, मेरा कहना मिथ्या नहीं है ॥ १५ ॥

भरण्यां क्षीरकाष्ठस्य कीलं पञ्चांगुलं खनेत् ।
नौकामध्ये तदा नौकास्तम्भनं जायते ध्रुवम् ॥१६॥

भरणी नक्षत्र में गूलर की लकड़ी की पांच अंगुल की कील नाव के बीच में गाड़ दे तो निश्चय करके नाव का स्तम्भन हो ॥ १६ ॥

पुष्यार्केण तु गृह्णीयात् कृष्णधत्तूरमूलकम् ।
कट्यां बद्ध्वा गर्भिणीनां गर्भस्तम्भः प्रजायते ॥१७॥

रविवार के दिन पुष्यनक्षत्र में काले धतूरे की जड़ लाकर गर्भिणी की कमर में बांधें तो गर्भस्तम्भन हो ॥ १७ ॥

बिम्बाकाष्ठस्य धूपेन योनिं धूपयते यदा ।
मुक्तगर्भा तदा नारी जायते नात्र संशयः ॥१८॥

बिंबाकाष्ठ के धुएं से योनि में धूप देने से स्त्री का गर्भ गिर पड़ता है इसमें सन्देह नहीं ॥ १८ ॥

ॐ नमो भगवते महानृसिंहाय सर्वस्तम्भनकर्त्रे सर्वस्तम्भनं कुरु स्वाहा । (सपादलक्षजपात्सिद्धिर्भवति ।)

इस मन्त्र को सवा लाख जपने से सिद्धि होगी ।

चतुर्थांक समाप्त

पंचमः अंकः

ईश्वर उवाच

अथातः शृणु योगीन्द्र प्रयोगं द्वेषणाभिधम् ।
अस्मिन्कृते महासिद्धिर्जायते द्वेषणात्मिका ॥१॥

ईश्वर बोले—हे योगिराज ! अब द्वेषणप्रयोग सुनो । इसके करने से द्वेषण में बड़ी सिद्धि प्राप्त होती है ॥१॥

मार्जारकमूषकयोर्विष्ठामादाय यत्नतः ।
विद्विषः पादतलतो मृदमादाय मिश्रयेत् ॥२॥

बिलाव और चूहे की विष्ठा लेकर उसमें शत्रु के पैर के तले की मिट्टी लेकर मिलावे ॥२॥

जपेन्मन्त्रशतं कुर्यान्नरपुत्तलिकां शुभाम् ।
नीलवस्त्रेण संवेष्टच तद्गृहे निखनेद्यदि ॥३॥

मन्त्र को सौ बार जप करके उससे आदमी का पुतला बनायें और नीला कपड़ा लपेटकर उसके घर में गाड़ दे ॥३॥

विद्वेषो जायते शीघ्रं पितृपुत्रावपि ध्रुवम् ।
चिताभस्मयुतं तत्तु सर्पयोर्दन्तचूर्णकम् ॥४॥

इससे पिता और पुत्र तक में शीघ्र लड़ाई हो जाये । सांप और नकुल के दांत पीसकर उनमें चिता की राख मिलाये ॥४॥

पृथक्पुत्तलिकां कृत्वा तत्तन्नाम्नाभिमन्त्रिताम् ।
उद्याने निखनेद् भूमौ विद्वेषो जायते ध्रुवम् ॥५॥

और अलग पुतले बनाकर जुदे-जुदे उनके नाम लेकर मन्त्र से उन पर पानी के छींटे दे और किसी बगीचे में धरती में गाड़ दे तो उनमें जरूर आपस में लड़ाई हो ॥५॥

गजकेसरिणोर्दन्तान्नवनीतेन पेषयेत् ।
यन्नाम्ना हूयते चाग्नौ तयोर्विद्वेषणं भवेत् ॥६॥

हाथी और शेर के दांतों को पीसकर और उनमें मक्खन मिलाकर जिन जिनका नाम लेकर अग्नि में होम करे उनमें आपस में लड़ाई हो जाए ॥६॥

ॐनमो नारदाय अनयोर्विद्वेषं कुरु कुरु ऐं ह्रीं क्लीं फट् स्वाहा।
(चतुर्लक्षजपात्सिद्धिर्भवति।)

इस मन्त्र को चार लाख जपने से सिद्धि होगी।

पंचमांक समाप्त

षष्ठः अंकः

ईश्वर उवाच

शृणु योगीन्द्र वक्ष्यामि उच्चाटनविधिं परम्।
यस्य साधनमात्रेण भवेदुच्चाटनं नृणाम् ॥१॥

हे योगिराज ! सुनो, मैं उच्चाटन की उत्तम विधि कहता हूं, जिसके साधन से ही मनुष्यों का उच्चाटन हो जाए ॥१॥

ब्रह्मदण्डीचिताभस्मसिद्धार्थैः सम्प्रलेपयेत्।
शिवलिंगं मन्दवारे तद्गृहीत्वा गृहे क्षिपेत् ॥२॥
यस्य तस्योच्चाटनं स्यात्पशुपुत्रादिभिः सह।

ब्रह्मदण्डी, चिता की राख और सरसों से शनिवार के दिन शिवजी के लिंग पर लेपन करे और फिर उस लेप को लाकर जिसके घर में फेंके ॥२॥
उसका पशु तथा बाल-बच्चों समेत उच्चाटन हो जाए।

काकोलूकस्य पक्षाणि यस्य चुल्ल्यां खनेद्रवौ ॥३॥

कौए और उल्लू के पंख रविवार को जिसके चूल्हे में गाड़ दे ॥३॥

उच्चाटनं भवेत्तस्य नान्यथा मम भाषितम्।

उसका उच्चाटन हो, मेरा कहना झूठ नहीं है।

आर्द्रोदुम्बरकाष्ठस्य कीलकं चतुरंगुलम् ॥४॥
शयने यस्य निखनेत्तस्योच्चाटनकं ध्रुवम्।
उलूकविष्ठामपि वा निखनेच्छयने तथा ॥५॥

गूलर की गीली लकड़ी की चार अंगुल की कील लेकर ॥४॥

जिसके पलंग में गाड़ दे अथवा उल्लू की विष्ठा शय्या में लगा दे उसका निश्चय ही उच्चाटन हो ॥५॥

नरास्थिकीलकं द्वारि निखनेच्चतुरंगुलम् ।
तत्र मूत्रं तु यः कुर्यात्तस्योच्चाटनकं भवेत् ॥६॥

आदमी की हड्डी की चार अंगुल की झील बनाकर दरवाजे पर गाड़ दे और वहां जो मूत्र करे उसका उच्चाटन हो ॥६॥

ॐ नमो भगवते महारुद्राय रौद्ररूपाय अमुकस्य सपरिवारस्योच्चाटनं कुरु कुरु फट् स्वाहा । (सपादलक्षजपात्सिद्धिर्भवति)

इस मंत्र को सवा लाख जपने से सिद्धि हो ।

षष्ठांक समाप्त

सप्तमः अंकः

ईश्वर उवाच

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि वशीकरणमद्भुतम् ।
यत्प्रयोगाद् वशं यान्ति नरा नार्यश्च सवशः ॥१॥

ईश्वर बोले—अब अद्भुत वशीकरण कहता हूं जिसके प्रयोग से पुरुष, स्त्री, सब वश में हो जाते हैं ॥१॥

ब्रह्मदण्डीवचाकुष्ठचूर्णं सूर्यस्य वासरे ।
ताम्बूलेन तु ये दद्यात्स वश्यो वर्तते सदा ॥२॥

रविवार के दिन ब्रह्मदण्डी, वच, कूट इनका चूरा जिसे पान में रखकर दे वह सदा वश में रहे ॥२॥

सहदेवीं गृह्य पुष्यार्के छायाशुष्कां विधाय च ।
दद्याच्चूर्णं च ताम्बूले सर्वलोकवशं नयेत् ॥३॥

पुष्यनक्षत्र में रविवार को सहदेवी लाकर उसे छाया में सुखावे और उसका चूरा पान में रखकर दे तो सब संसार को वश में कर ले ॥३॥

देवदाल्या च सिद्धार्थैर्गुटिकां कारयेद् बुधः।
मुखे निक्षिप्य भाषेत सर्वलोकान् वशं नयेत् ॥४॥

देवदाली और सरसों की गोली बनाकर उसे मुख में रखकर बातचीत करे तो सब संसार वश में हो जाए ॥४॥

कुंकुमं तगरं कुष्ठं हरितालं मनःशिलाम्।
अनामिकाया रक्तेन तिलकं वश्यकारकम् ॥५॥

केशर, तगर, कूट, हरताल और मनसिल इनमें अनामिका अंगुली का रुधिर मिलाकर तिलक करे तो सब वशीकरण होता है ॥५॥

ॐ ह्रीं नमो मोहिन्यै सर्वलोकान् मे वशं कुरु कुरु हुँ फट् स्वाहा।
(सपादलक्षजपात्सिद्धि भवति।)

इस मन्त्र को सवा लाख जपने से सिद्धि होगी।

अथ स्त्रीवश्यम्

करपादनखानां च भस्म ताम्बूलपत्रके।
दातव्यं रविवारे च वशीकरणमद्भुतम् ॥६॥

रविवार को हाथ, पैर के नखों की राख पान में रख कर खिलायें तो स्त्री वश में हो जाए ॥६॥

भौमवारे लवंगं च लिंगछिद्रे च निक्षिपेत्।
बुधे निष्कास्य ताम्बूले दद्यात्सा वशगा भवेत् ॥७॥

मंगल के दिन एक लौंग लिंग के छेद में उरस दे। फिर इसे बुधवार के दिन निकालकर जिसे पान में रखकर दे वह वश में हो जाए ॥७॥

वामपादतलात् पांसुं वनितायाः शनौ हरेत्।
तस्य पुत्तलिकां कुर्यात्तस्याः केशान्नियोजयेत् ॥८॥

स्त्री के बाएं पैर के नीचे से धीरे से मिट्टी ले ले और उसकी पुतली बनाकर उसमें बाल लगावे ॥८॥

नीलवस्त्रैर्वेष्टयित्वा स्ववीर्यं तु भगे क्षिपेत्।
सिन्दूरेण समायुक्तां निखनेद् द्वारदेशके ॥९॥

उसे नीले कपड़े से लपेटकर उसके भग में अपने वीर्य का निक्षेप करे और फिर सिंदूर लगाकर उसे दरवाजे पर गाड़ दें ॥९॥

उल्लंघनाद् वशं याति प्राणैरपि धनैरपि।
कृतज्ञः स्ववशं कुर्यान्मोदते सुचिरं भुवि॥१०॥

उसे लांघने से प्राण और धन सहित स्त्री वश में हो जाए। फिर कृतज्ञ मनुष्य चिरकाल तक पृथ्वी पर आनन्द करे॥१०॥

तालीसकुष्ठतगरैर्लिप्तां क्षौमीं सुवर्तिकाम्।
सिद्धार्थतैले निक्षिप्य कज्जलं नरमस्तके॥११॥

रेशम की बत्ती बनाकर उसपर तालीस, कूट और तगर चुपड़े तथा आदमी की खोपड़ी में सरसों का तेल भरकर उसे जलाकर काजल बनाये॥११॥

पातयेदञ्जनात्तस्य सर्वदा भुवनत्रये।
दृष्टिगोचरमायातः सर्वो भवति दासवत्॥१२॥

उस काजल के आंजने से हमेशा तीनों भुवनों में आंखों के सामने आये हुए सब आदमी दास के समान हो जायेंगे॥१२॥

विप्राय वेदविदुषे दत्त्वा कर्षसुवर्णकम्।
एतन्मन्त्रं जपेद्यत्नाद् वश्यं सिद्ध्यति नान्यथा॥१३॥

वेदपाठी ब्राह्मण को सोलह मासे सोने का दान करके यत्नपूर्वक इस मन्त्र के जपने से ही सिद्धि होगी, अन्यथा नहीं॥१३॥

ॐ नमः कामाक्ष्यै देव्यै अमुकीं मे वशं कुरु कुरु फट् स्वाहा।
(सपादलक्षजपात्सिद्धिर्भवति।)

इसे सवा लाख जपने से सिद्धि होगी।

अथ राजवश्यम्

विष्णुक्रान्ताबीजतैलं दीपे प्रज्वाल्य यत्नतः।
दर्शे कार्तिकमासस्य सोमवारेऽर्द्धरात्रके॥१४॥

दिवाली के दिन सोमवार हो तो आधी रात को विष्णुक्रान्ता के बीजों का तेल भरकर दिया जलाये॥१४॥

कज्जलं पातयेद्धोमाञ्छुभ्रे हेमशरावके।
यदञ्जनाच्चक्रवर्ती राजा वशमवाप्नुयात्॥१५॥

सोने की साफ कटोरी में काजल बनाये। उसके आंजने से चक्रवर्ती राजा वश में हो जाए ॥१५॥

भौमवारे दर्शदिने कृत्वा नित्यक्रियाः शुचिः।
वने गत्वा ह्यपामार्गवृक्षं पश्येदुदङ्मुखः ॥१६॥

अमावस को मंगलवार हो तो नित्य कर्म करके पवित्र होकर वन में जाए और उत्तर की तरफ मुख करके अपामार्ग के वृक्षों को देखे ॥१६॥

तत्र विप्रं समाहूय कृत्वा पूजां यथाविधि।
पलमेकं सुवर्णस्य दद्यात्तस्मै द्विजन्मने ॥१७॥

वहां ब्राह्मण को बुलाकर और उसकी विधिपूर्वक पूजा करके उसे ६४ माशा सोना दे ॥१७॥

तस्य हस्तेन गृह्णीयादपामार्गस्य बीजकान्।
मौनेन स्वगृहं गच्छेत् कृत्वा बीजांस्तु निस्तुषान् ॥१८॥

उसके हाथ से अपामार्ग के बीज तुड़वाकर उन्हें अपने घर चुपचाप ले जाये और उनका छिलका निकाल कर साफ करे ॥१८॥

गौरीशं हृदये ध्यात्वा राजानं खादयेच्च तान्।
येन केनाप्युपायेन यावज्जीवं भवेद्वशे ॥१९॥

महादेव का ध्यान करके उन्हें किसी प्रकार राजा को खिला दे तो वह जीवन-पर्यन्त उसके वश में हो जाए ॥१९॥

चक्रवर्ती वशं याति नान्यथा मम भाषितम्।
न नीचाय प्रदातव्यं प्रयोगमनुभूतिदम् ॥२०॥

चक्रवर्ती राजा भी वश में हो जाए। मेरा कहना मिथ्या नहीं है। यह ऐश्वर्य देने वाला प्रयोग नीच पुरुष को नहीं देना चाहिए ॥२०॥

ॐ नमो भास्कराय जगदात्मने राजानं वशमानय कार्यं कुरु कुरु फट् स्वाहा। (सपादलक्षजपात्सिद्धिः।)

इसे सवा लाख जपने से सिद्धि होगी।

सप्तमांक समाप्त

अष्टमः अंकः

ईश्वर उवाच

अथाकर्षिष्ट प्रवक्ष्यामि शृणुष्वैकमना मुने।
यस्य प्रयोगात् कृष्यन्ते अपि दूरस्थिता नराः ॥१॥

महादेव बोले—हे मुनि ! एकाग्रचित होकर सुनो। अब मैं आकर्षण कहता हूं जिसका प्रयोग करने से दूर स्थित आदमियों का भी आकर्षण हो जाता है ॥१॥

कृष्णधत्तूरपत्राणां रसैर्गोरोचनायुतैः।
करवीरस्य लेखिन्या यन्त्रं पञ्चदशं लिखेत् ॥२॥

काले धतूरे के पत्तों के रस में गोरोचन मिलाकर कनेर की कलम से पन्द्रह का यन्त्र[1] लिखे ॥२॥

भूर्जपत्रेषु तन्नाम्ना तापयेत् खदिराग्निना।
शतयोजनगो वापि शीघ्रमायाति नान्यथा ॥३॥

उसे भोजपत्र पर लिखकर जिसका आकर्षण करना हो उसका नाम लेकर खदिर की आंच से तपाये तो सौ योजन दूर रहने वाला भी शीघ्र आ जाए। इसमें मिथ्या कुछ नहीं ॥३॥

नृकपाले लिखेद् यन्त्रं गोरोचनसकुंकुमैः।
खदिरांगारकैस्ताप्यं त्रिसन्ध्यं यस्य नामतः ॥४॥

गोरोचन और कुंकुम मिलाकर मनुष्य की खोपड़ी में यन्त्र लिखकर उस मनुष्य का नाम लेकर तीनों समय खदिर की अग्नि में तपावे ॥४॥

मन्त्रं जपेत् सुसंसिद्धं कर्षयेदुर्वशीमपि।
ब्रह्मदण्डीं समादाय पुष्यार्केण तु चूर्णयेत् ॥५॥

फिर सिद्धमन्त्र का जप करे तो उर्वशी का भी आकर्षण कर ले। रविवार को पुष्यनक्षत्र में ब्रह्मदण्डी लाकर उसका चूर्ण करे ॥५॥

१—पंचदशी-यन्त्र के स्वरूप ज्ञान के लिए देखें—'यन्त्र-शक्ति' दूसरा भाग।

कामार्तां कामिनीं दृष्ट्वा उत्तमांगे विनिक्षिपेत् ।
पृष्ठतः सा समायाति नान्यथा मम भाषितम् ॥६॥

और कामार्ता कामिनी को देखकर उसके शिर पर डाल दे तो वह उसके पीछे हो जाए मेरा कहना अन्यथा नहीं ॥६॥

ॐ नमो वीरवेतालाय मन्दराचलवासिने अमुकम् आकर्षय आकर्षय ह्रीं क्लीं फट् स्वाहा। (लक्षत्रयजपात्सिद्धिर्भवति।)

यह मन्त्र तीन लाख वार जपने से सिद्धि होगी।

अष्टमांक समाप्त

नवमः अंकः

ईश्वर उवाच

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि यक्षिणीनां सुसाधनम् ।
यस्य सिद्धौ मनुष्याणां संसिद्धचन्ति हृच्छ्याः ॥१॥

महादेव बोले—अब यक्षिणियों का साधन कहता हूं। जिसके सिद्धि करने से मनुष्यों की सब अभिलाषा पूरी होती है ॥१॥

आषाढपूर्णिमायां तु कृत्वा क्षौरादिकाः क्रियाः।
सितेज्ययोरमौढ्ये तु साधयेद् यक्षिणीं नरः ॥२॥

आषाढ़ शुक्ला पूनों के दिन हजामत बनवाकर बृहस्पति और शुक्र के उदय में मनुष्य यक्षिणीका साधन करे ॥२॥

प्रतिपद्दिनमारभ्य श्रावणेन्दुबलान्वितः ।
मासमात्रप्रयोगोऽयं निर्विघ्नेन विधिं चरेत् ॥३॥

सावन बदी प्रतिपदा से लेकर चन्द्रबल देखकर एक मास तक यह प्रयोग निर्विघ्न करे ॥३॥

निर्जने बिल्ववृक्षस्य मले कुर्याच्छिवार्चनम् ।
षोडशैरुपचारैस्तु रुद्रपाठसमन्वितम् ॥४॥

एकान्त स्थान में वेल के वृक्ष के नीचे शिवजी का षोडशोपचार सहित पूजन करे और रुद्र पाठ[1] करे ॥४॥

त्र्यम्बकेत्यस्य मन्त्रस्य जपं पञ्चसहस्रकम्।
दिवसे दिवसे कृत्वा कुबेरस्य च पूजनम् ॥५॥

"त्र्यम्बकं यजामहे"[2] इस मन्त्र का पांच हजार जप करे और प्रतिदिन कुबेर का पूजन करे ॥५॥

मंत्र—यक्षराज नमस्तुभ्यं शङ्करप्रियबान्धवः।
एकां मे वशगां नित्यं यक्षिणीं कुरु ते नमः ॥६॥

यह मन्त्र है ॥६॥

इति मन्त्रं कुबेरस्य जपेदष्टोत्तरं शतम्।
ब्रह्मचर्येण मौनेन हविष्याशी भवेद्दिवा ॥७॥

यह कुबेर का मन्त्र है इसे एक सौ आठ बार जपे और दिन में ब्रह्मचर्य से मौन धारण करके रहे तथा हविष्य भोजन करे ॥७॥

रात्रेस्तु मध्यमे यामे विनिद्रो मितभोजनः।
बिल्ववृक्षं समारुह्य जपेन्मन्त्रमिमं सदा ॥८॥

रात के बीच के दो पहरों में निद्रारहित हो कुछ भोजन करके बेल के वृक्ष के ऊपर बैठकर यह मन्त्र जपे ॥८॥

मंत्र—ॐक्लीं ह्रीं ऐं ॐ श्रीमहायक्षिण्यै सर्वैश्वर्यप्रदात्र्यै नमः श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ॐ स्वाहा।

इति मन्त्रस्य च जपं सहस्रत्रय संमितम्।
कुर्याद् बिल्वसमारूढो मासमात्रमतन्द्रितः ॥९॥

वेल के वृक्ष पर बैठकर सावधान होकर केवल एक मास तक इस मन्त्र का तीन हजार जप करे ॥९॥

मध्वामिषबलिं तत्र कल्पयेत संस्कृतं पुरः।
नानारूपधरा यक्षी क्वचित्तत्रागमिष्यति ॥१०॥

---

१. रुद्रपाठ से रुद्राष्टाध्यायी के पाठ का निर्देश है।

२. यह मन्त्र और इसकी जपविधि के लिए डॉ० त्रिपाठी की पुस्तक देखिये—"महामृत्युंजय—साधना और सिद्धि।"

उत्तम मधु और मांस सामने रख ले, क्योंकि अनेक रूप धरनेवाली यक्षिणी किसी-न-किसी समय वहां आयेगी ॥१०॥

तां दृष्ट्वा न भयं कुर्याज्जपे संसक्तमानसः।
यस्मिन्दिने बलिं भुक्त्वा वरं दातुं समर्थयेत् ॥११॥

उसे देखकर डरे नहीं, पर मन लगाकर जप करे। जिस दिन बलि का भोजन कर, वर देना चाहे ॥११॥

तदा वरान् वै वृणुयात्तांस्तान्वै मनसेप्सितान्।
धनमानयितुं ब्रूयादथवा कर्णवार्तिकीम् ॥१२॥

तब जो जो मन की इच्छा हो सब वर उससे मांग ले। धन मंगवाने का वर मांग ले या अपने कान में सब बात कहलाने का वर मांग ले ॥१२॥

भोगार्थमथवा ब्रूयान्नृत्यं कर्तुमथापि वा।
भूतानानयितुं वापि स्त्रियमानयितुं तथा ॥१३॥

भोग भोगने के लिए अथवा नाच देखने के लिए वर मांग ले। प्राणियों अथवा स्त्रियों को बुलवा लेने का वर मांग ले ॥१३॥

राजानं वा वशीकर्तुमायुर्विद्यायशोबलम्।
एतद्यदन्यदीप्सेत साध्यकस्तत्तु याचताम् ॥१४॥

राजा को वश करने का वर मांग ले या आयु, विद्या, यश और बल का वर मांग ले। इसके सिवाय साधक की जो इच्छा हो सो वर मांग ले ॥१४॥

चेत्प्रसन्ना यक्षिणी स्यात्सर्वं दत्ते न संशयः।
अशक्तस्तु द्विजः कुर्यात् प्रयोगं सुरपूजितम् ॥१५॥

यदि यक्षिणी प्रसन्न हो जाए तो निःसन्देह सब वर दे देती है। जो मनुष्य अपने आप प्रयोग करने में असमर्थ हो वह इस प्रयोग को ब्राह्मणों से कराये। देवता भी इस प्रयोग का आदर करते हैं ॥१५॥

सहायानथवा गृह्य ब्राह्मणान् साधयेद् व्रतम्।
नित्यं कुमारिका भोज्याः परमान्नेन वै त्रयः ॥१६॥

अथवा ब्राह्मणों की सहायता लेकर इस व्रत का साधन करे। तीन कन्याओं को प्रतिदिन उत्तम अन्न से भोजन कराये ॥१६॥

सिद्धे धनादिकेनैव सदा सत्कर्म चाचरेत् ।
कुकर्मणि व्ययश्चेत्स्यात्सिद्धिर्गच्छति नान्यथा ॥१७॥

यक्षिणी के सिद्ध होने पर जो धन आदि प्राप्त हो उसे अच्छे कामों में लगावे। बुरे कामों में व्यय करने से सिद्धि कदापि नहीं रहती ॥१७॥

गुप्तेन विधिना कार्यं प्रकाशं नैव कारयेत् ।
प्रकाशे बहवो विघ्ना जायन्ते नात्र संशयः ॥१८॥

यह सब गुप्त विधि से करे। इसे प्रकाश न करे। प्रकाश करने में निःसन्देह बहुत से विघ्न होते हैं ॥१८॥

प्रयोगश्चानुभूतोऽयं तस्माद्यत्नवदाचरेत् ।
पूर्यमाणा निर्विघ्नेन भवेत्सिद्धिरनुत्तमा ॥१९॥

यह प्रयोग अनुभव किया हुआ है। इसे यत्नपूर्वक करे। इसे निर्विघ्न पूरा करने से अच्छी सिद्धि होती है ॥१९॥

गोप्यं चेदं महत्तन्त्रं यस्मै कस्मै न दापयेत् ।
दुर्जनस्पर्शनाद्विद्या भवत्यल्पफला यतः ॥२०॥

इस महामन्त्र को छुपाकर रखें। चाहे जिसको न देवे। दुर्जन स्पर्श से विद्या का फल घट जाता है ॥२०॥

नवमांक समाप्त

दशमः अंकः

ईश्वर उवाच

अथ ते कथयिष्यामि रसायनविधिः परम् ।
कुबेरतुल्यो भवति यस्य सिद्धौ नरो भुवि ॥१॥

महादेव बोले—अब मैं तुझसे रसायन की विधि कहता हूं जिसके सिद्ध करने से पृथ्वी पर मनुष्य कुबेर के समान हो जाता है ॥१॥

गोमूत्रं हरितालं च गन्धकं च मनःशिलाम् ।
समं समं गृहीत्वा तु यावच्छुष्कं तु पेषयेत् ॥२॥

गोमूत्र, हरताल, गंधक, मैनसिल इनको बराबर लेकर जबतक न सूखे तबतक खरल करे ॥२॥

गोमूत्रं रक्तवर्णाया गन्धकं रक्तवर्णकम् ।
एकादशदिनं यावद्रक्ष्यं यत्नेन वै शुचि ॥३॥

लाल गायका मूत्र और लाल गंधक इन्हें पवित्र होकर ग्यारह दिन तक यत्न-पूर्वक रखे ॥३॥

गोलं कृत्वा द्वादशेऽह्नि रक्तवस्त्रेण वेष्टयेत् ।
चतुरंगुलमानेन मृदं लिप्त्वा विशोषयेत् ॥४॥

बारहवें दिन इनका गोला बनाकर उस पर लाल कपड़ा लपेटे और चार अंगुल मोटी मिट्टी चारों ओर लगाकर इसे सुखा ले ॥४॥

पंचहस्तप्रमाणेन भूमौ गर्तं तु कारयेत् ।
पलाशकाष्ठलोष्ठैस्तु पूरयेद् द्रव्यमध्यगम् ॥५॥

धरती में पांच हाथ नीचा गढ़ा खोदे और गोला बीच में रखकर उसे पलास के कोयलों से भर दे ॥५॥

अग्निं दद्यात्प्रयत्नेन स्वांगशीतं समुद्धरेत् ।
ताम्रपत्रेषु सन्तप्ते तद्भस्म तु प्रदापयेत् ॥६॥

फिर उसमें यत्नपूर्वक अग्नि लगावे । जब अग्नि जलकर अपने आप ठण्डी हो जाए तब गोले को बाहर निकाल ले और तांबे का पत्रा तपाकर उस पर गोलेकी राख डाले ॥६॥

गुञ्जैकं तत्क्षणात्स्वर्णं जायते ताम्रपत्रकम् ।
अरण्ये निर्जने देशे शिवालयसमीपतः ॥७॥

एक गुंजाके बराबर तांबेका पत्रा तो उसी समय सुवर्ण हो जाए । वन में एकान्त स्थान में शिव के मंदिर के पास ॥७॥

शुक्लपक्षे सुचन्द्रेऽह्नि प्रयोगं साधयेत्सुधीः ।
त्र्यम्बकेति च मन्त्रस्य जपं दशसहस्रकम् ॥८॥

शुक्लपक्ष में जिस दिन चन्द्रमा अच्छा हो उस दिन यह प्रयोग करे । "त्र्यम्बकं यजामहे" इस मन्त्र का दस हजार जप करे ॥८॥

प्रत्यहं कारयेद्विप्रान्भोजयेद्द्रुद्रसंमितान् ।
यावत्सिद्धिर्न जायेत तावदेतत्समाचरेत् ॥९॥

यों प्रतिदिन करे और ग्यारह ब्राह्मणों को प्रतिदिन भोजन कराये। जब तक सिद्धि न हो, इसी प्रकार करे ॥९॥

अथ द्रव्यमर्दनमन्त्रः

ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वर्णादीनामीशाय रसायनस्य सिद्धिं कुरु कुरु फट् स्वाहा ।
(प्रत्यहं मर्दने अयुतं जपेत् ।)

हरताल आदि को खरल करते समय प्रतिदिन यह मन्त्र दस हजार जपे।

इत्येवं शम्भुना प्रोक्ता मन्त्राः प्रत्यक्षसिद्धिदाः ।
स्वप्ने शिवाख्यगिरये अनुभूतास्तु तेन वै ॥१०॥

ये प्रत्यक्ष सिद्धि देने वाले मन्त्र स्वप्न में महादेव ने शिवगिरि से कहे और शिवगिरि ने उनकी परीक्षा की ॥१०॥

तदाज्ञया मया बद्धाः शुभैः पद्यैर्यथामति ।
अनेन विधिना मत्या ये करिष्यन्त्यसंशयाः ॥११॥

शिवगिरि की आज्ञा से मैंने बुद्धि के अनुसार सब प्रयोगों को श्लोक बद्ध किया। जो मनुष्य श्रद्धापूर्वक इस विधि से इन प्रयोगों को करेंगे ॥११॥

सिद्धिं ह्यलौकिकीं लब्ध्वा भविष्यन्ति सुपूजिताः ।
सन्देहोऽत्र न कर्तव्यः साक्षाच्छंकरभाषिते ॥१२॥

उन्हें अलौकिक सिद्धि प्राप्त होगी और सब उनकी पूजा करेंगे। साक्षात् महादेव के कहने में संदेह नहीं करना चाहिए ॥१२॥

श्रीमद्गौडद्विजाग्रणीर्मतिमतां श्रेष्ठो भवान्यभिधो,
ह्यासीद्रामकुमार इत्यभिहितो विद्वानभूत्तत्सुतः ।
यः शास्त्रार्थविवेकनिश्चयतया ह्याराध्य सम्यक् शिवं,
लेभे जन्मलयादिदुःखरहितामानन्दभूतां गतिम् ॥१३॥

गौडब्राह्मणों में श्रेष्ठ, विद्वद्वर श्रीभवानीप्रसाद हुए। उनके पुत्र पंडित रामकुमार हुए। ये शास्त्रों के अर्थों के विचार में बड़े नवीण थे। इन्होंने शिव की

आराधना की और जन्म-मरणादि दुःख से रहित आनन्द स्वरूप गति को प्राप्त हुए ॥१३॥

तत्सूनुः कमलाऽदिशब्दसहितो नारायणोऽहं द्विज-
स्तद्योगीन्द्रनिदेशतो रचितवांस्तन्त्रं महेशाभिधम् ।
यस्मिन् संशयवर्जिता बहुविधा सिद्धिः प्रकाशीकृता,
तच्छम्भोः कृपया सुसाधकजनानन्दाय भूयात्सदा ॥१४॥

इनके पुत्र लक्ष्मीनारायण ने शिवगिरि की आज्ञा से माहेश्वर तन्त्र का निर्माण किया। इसमें संशय रहित, अनेक प्रकार की सिद्धि प्रकट की है, वह शम्भु की कृपा से साधकों को आनन्ददायक हो ॥१४॥

श्रीमज्जैपुरपत्तनेऽस्ति सुभगे श्रीमाधवाख्यो नृप-
स्तस्मात्क्रोशचतुर्दशाच्छशिदिशि ग्रामोस्ति धोलाभिधः ।
तत्रास्ते विमलोदका इषुनदी श्रीफाल्गुनेनोद्धृता,
तस्मिन्मे वसतिः सुपूजिततमे देशे च मत्स्याभिधे ॥१५॥

जहां श्रीराजा माधवराव राज्य करते हैं उस जयपुर से चौदह कोस उत्तर में एक 'धौला' नामक ग्राम है। वहां अर्जुन के द्वारा उद्धार की गई निर्मल जलवाली बाणगंगा बहती है। ऐसे मत्स्य देश में मेरा निवास है ॥१५॥

दशमांक समाप्त।

इति माहेश्वरतन्त्रं समाप्तम् ।

भारतीय संस्कृति का श्रेष्ठतम ग्रन्थ

महामृत्युञ्जय

(साधना एवं सिद्धि)

लेखक

डॉ० रुद्रदेव त्रिपाठी

एम०ए०,पी एच०डी०,डी०लिट्

दैहिक, दैविक, और भौतिक कष्टों से मुक्ति पाने के लिए महामृत्युञ्जय शिव की आराधना मन्त्र-जप, यन्त्र-पूजा, यन्त्र-धारण, कवच एवं स्तोत्र-पाठ तथा उचित औषध विशेष का हवन बहुत ही सफल माने गये हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ "महामृत्युञ्जय : साधना एवं सिद्धि" इस दिशा में पूर्ण सहायक सिद्ध होगा।

अमृत की प्राप्ति के लिये संगृहीत यह अनूठा "पञ्चामृत" निःसन्देह आपके लिये प्रत्येक क्षण में सहायक सिद्ध होगा।

इसमें आप प्राप्त करेंगे।

☆ मानसिक शांति ☆ रोग एवं क्लेश से मुक्ति
☆ विपत्ति निवारण ☆ जीवन-रक्षा ☆ साहस को बढ़ावा
☆ अतीन्द्रिय ज्ञान ☆ मनोकामना पूर्ण हो, मनमुटाव दूर हो
☆ कठिनाइयों से छुटकारा

सरलता इतनी कि जिसे आप स्वयं भी कर सकें

विद्वान वर्ग इसकी उच्चता से परिचित है।

पत्र लिखकर मंगाये मूल्य 40 रुपये : (डाक व्यय अलग)

रंजन पब्लिकेशन्स

16, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002